इस्लाम के बारे में पेरियार की अनमोल बातें

September 17, 2022 by Insaaf Times

Spread the love

अभय कुमार: प्रसिद्ध पत्रकार सह रिसर्च स्कॉलर जेएनयू

इस्लाम के बारे में पेरियार की अनमोल बातें समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी, विचारक और दलितों के मसीहा, ईवी रामास्वामी की जयंती हर साल 17 सितंबर को सामाजिक न्याय दिवस के रूप में मनाई जाती है. उनका जन्म आज से 143 साल पहले इरोड में, कोयंबटूर के पास, मद्रास पर्सीडेंसी में हुआ था. अपने पूरे जीवन में, उन्होंने समानता, स्वाभिमान, विविधता, भाईचारे और बहस और तर्क के आधार पर एक नए समाज के निर्माण के लिए संघर्ष किया.

उनका आंदोलन पूरी तरह से जाति समुदाय और अंधविश्वास के खिलाफ था.तब लोग उन्हें प्यार से पेरियार कहते थे, जिसका अर्थ है बड़ा आदमी या बूढ़ा. स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, पेरियार कांग्रेस नेतृत्व से नाराज थे क्योंकि यह पार्टी सामाजिक न्याय में कम दिलचस्प दिखा रही थी.पेरियार और कांग्रेस के अंदर के अन्य नेताओं का मानना था कि सामाजिक समानता के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता अधूरी है. पेरियार का विचार था कि असमानता को मिटाने के लिए जाति को जड़ से उखाड़ना और धार्मिक नेताओं द्वारा अंधविश्वास और शोषण को रोकना अनिवार्य हैं.

अगर ऐसा ही हुआ तो पिछड़ों और दलितों को उनका हक मिलेगा. पेरियार ने आगे बढ़कर स्वाभिमान का आंदोलन चलाया, तब तक पराधीनों (जिसपर किसी दूसरे का अंकुश या शासन हो) का भला नहीं हो सकता. 1920 के दशक में धर्म परिवर्तन के मुद्दो पर जनता को संबोधित किया 1920 के दशक में धर्म परिवर्तन के मुद्दे ने गति पकड़ी.एक तरफ, पराधीन वर्ग समानता हासिल करने के लिए इस्लाम और ईसाई धर्म स्वीकार कर रहे थे, जबकि दूसरी ओर, आर्य समाज आंदोलन मुसलमानों को हिंदुओं में परिवर्तित करने में सक्रिय था. कई जगह नाम को लेकर हिंसा की घटनाएं भी हुईं.

इसी पृष्ठभूमि में पेरियार इस अहम विषय पर जनता को संबोधित भी कर रहे थे. 1920 के दशक के उत्तरार्ध से 1950 के दशक तक, उन्होंने दलितों और पिछड़ों को इस्लाम स्वीकार करने और अपने उपदेशों के माध्यम से मोक्ष प्राप्त करने का आह्वान किया. हालांकि कुछ सांप्रदायिक तत्व उस जमाने में भी इस्लाम को नकारात्मक चीज मानते थे. लेकिन पेरियार की राय उनसे बिल्कुल अलग थी.

वह इस्लाम को हिंसा पर आधारित धर्म नहीं मानते थे, बल्कि वे इसे भाईचारे के सिद्धांत पर आधारित धर्म मानते थे.पेरियार ने इस बात से भी इंकार किया कि इस्लाम का प्रसार एक नकारात्मक विकास था.पेरियार ने एकेश्वरवाद (एकेश्वरवाद वह सिद्धान्त है जो ईश्वर एक है' अथवा एक ईश्वर है कि मान्यता को देता है) ,समानता और भाईचारे के सिद्धांत के लिए इस्लाम की प्रशंसा की संप्रदायवादियों के विपरीत, पेरियार ने इस्लाम के भीतर से आशा की एक किरण देखी. उन्होंने एकेश्वरवाद (एकेश्वरवाद वह सिद्धान्त है जो ईश्वर एक है' अथवा एक ईश्वर है कि मान्यता को देता है) ,समानता और भाईचारे के सिद्धांत के लिए इस्लाम की प्रशंसा की, जहां जाति असमानता के लिए कोई जगह नहीं है और धार्मिक नेताओं का कोई वर्ग नहीं है.

बार-बार उन्होंने जोर देकर कहा कि उन्हें इस्लाम में शरण लेनी चाहिए.चरमपंथियों ने उन्हें निशाना बनाया सच बोलने के लिए और ईमानदारी से इस्लाम के बारे में राय रखने के लिए, लेकिन वह डरते नहीं थे. बाबा साहब अम्बेडकर और पेरियार समाजिक न्याय की बात करते थे बाबा साहब अम्बेडकर की तरह, पेरियार ने भी धर्म के सामाजिक पहलुओं पर अधिक ध्यान दिया. पेरियार ने कहा' था कि जिस धर्म में सामाजिक कल्याण का संदेश है, जहां सामाजिक व्यवस्था मोहब्बत और भाईचारे पर आधारित है, जहां अंधविश्वास के लिए कोई जगह नहीं है, जहां जाति, नस्ल, लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं है, वही धर्म उत्पीड़ितों को बचा सकता है.

अम्बेडकर और पेरियार का मानना था कि समाज में सदियों से चली आ रही जाति की सामाजिक व्यवस्था को समाप्त करने के लिए धार्मिक सुधार की तत्काल आवश्यकता है. पेरियार ने कहा कि इस्लाम में मानवता और समानता पाई जाती है.इसलिए दलितों और अन्य अधीनता वाले लोगों को अपने उद्धार के लिए इस्लाम स्वीकार करना चाहिए, दूसरी ओर महात्मा गांधी धर्मांतरण के खिलाफ थे. उन्होंने कहा कि सभी धर्मों के सिद्धांत समान हैं.इसलिए, अपने प्राचीन धर्म को मजबूती से पकड़ें धर्म बदलना सही नहीं है.लेकिन अम्बेडकर और पेरियार की गांधी से अलग राय थी और उन्होंने धर्मांतरण को एक क्रांतिकारी कदम माना. अक्टूबर 1929 में अपने पैतृक गांव इरोड में पेरियार ने कहा: इस्लाम कबूल कर लिया हूं अक्टूबर 1929 में अपने पैतृक गांव इरोड में पेरियार ने कहा: इस्लाम कबूल कर लिया हूं आजादी मिल गई है. उन्हें अब जाति के आधार पर भेदभाव नहीं सहना पड़ेगा. उन्हें अज्ञानता से मुक्त किया जाएगा. पानी पीने के लिए उन्हें उच्च जातियों की दया पर नहीं रहना होगा .इस्लाम स्वीकार करने के बाद, दलितों ने एक नया सामूहिक जीवन शुरू किया, जो समानता और भाईचारे पर आधारित है.

इस्लाम धर्म अपनाने वाले दलित न केवल सिर उठाकर सड़कों पर चल सकेंगे, बल्कि उनके रोजगार के अवसर भी खुलेंगे, साथ ही उनका राजनीतिक पिछड़ापन भी दूर होगा और उनका सामाजिक पतन भी समाप्त होगा. अब उनका धर्म के नाम पर शोषण नहीं होगा और वे अपने अधिकारों के लिए लड़ सकेंगे.अम्बेडकर की तरह पेरियार ने भी धर्मांतरण को मोक्ष के एक तरीके के रूप में देखा. जहां अम्बेडकर अपनी मृत्यु से कुछ दिन पहले अपने जानने वालों के साथ बौद्ध धर्म में परिवर्तित हुए, वहीं पेरियार ने बार-बार इस्लाम को स्वीकार किया. पेरियार को हजरत मुहम्मद और इस्लाम के बारे में बोलने के लिए विरोध का सामना करना पड़ा 18 मार्च 1947 को त्रिचिरापल्ली में इसी विषय पर बोलते हुए पेरियार ने स्पष्ट किया था कि एक तर्कसंगत व्यक्ति होने के नाते, वह धार्मिक अनुष्ठानों को धर्म का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा नहीं मानते थे. अम्बेडकर और पेरियार के लिए, धर्म का सामाजिक पहलू सबसे महत्वपूर्ण था.

इस्लाम उन्हें पसंद था क्योंकि यह मानव कल्याण और भलाई पर जोर देता है. जिस तरह हजरत मुहम्मद को इस्लाम के बारे में बोलने के लिए विरोध का सामना करना पड़ा, उसी तरह उनके साथ भी कुछ ऐसा ही हो रहा था. चरमपंथी लगातार पेरियार को इस्लाम पर उनके विचारों के लिए बदनाम कर रहे थे. पेरियार पैगंबर इस्लाम के जन्म समारोह में भी हिस्सा लिया करते थे. उदाहरण के लिए, 23 दिसंबर, 1953 को चेन्नई में ऐसे ही एक मिलाद-उल-नबी कार्यक्रम में बोलते हुए पेरियार ने कहा कि मुहम्मद का मुख्य संदेश समानता था.आपने कहा कि

अल्लाह की नजर में सभी इंसान बराबर हैं.पेरियार ने कहा कि एकता और भाईचारे का उनका संदेश बहुत महत्वपूर्ण है.पेरियार ने यह भी कहा कि मुहम्मद साहब ने सब कुछ सोचने को कहा है.

इसका अर्थ है कि व्यक्ति को अपनी बुद्धि का प्रयोग करना चाहिए और किसी की बात पर आंख मूंदकर विश्वास नहीं करना चाहिए.उन्होंने जो कहा वह पृथ्वी पर भी देखा गया, जो मुहम्मद साहब की महानता को दर्शाता है.पवित्र पैगंबर के सम्मान में, पेरियार ने कहा कि उनके बाद इस दुनिया में कोई भी पैदा नहीं हुआ, जो मानव जाति के बारे में उनसे बेहतर दृष्टिकोण रखता हो.संदर्भ में आज जिस तरह से मुसलमानों और इस्लाम के खिलाफ नफरत पैदा की जा रही है, पेरियार के इन अनमोल शब्दों के मायने बढ़ जाती हैं. आज धर्म परिवर्तन की व्यक्तिगत प्रक्रिया को राजनीतिक रंग दिया जा रहा है और कहा जा रहा है कि इस्लाम कबूल करने वाला हर शख्स मजबूर है. इस्लाम फैलाने की प्रक्रिया को नकारात्मक और देश की सुरक्षा के लिए खतरे के रूप में देखा जाता है, जबकि अगर कोई मुसलमान हिंदू बन जाता है, तो खुशी मनाया जाता है और इसे घर वापसी कहा जाता है.यह दुखद है कि झूठा इस्लाम फैलाने के आरोप में निर्दोष मुस्लिम धर्मगुरुओं को जेल में डाला जा रहा है. इन परिस्थितियों में हमें पेरियार के इन अनमोल वचनों के बारे में और जानने और उन्हें आमजनों तक पहुंचाने की जरूरत है. निबंधकार जेएनयू से इतिहास में पीएचडी हैं।

ऑटिक्लस्

‹ किस लिए मनाया जाता है बेरोज़गार दिवस??

› प्रशांत किशोर के निराशा का प्रतिफल है उनकी नीतीश कुमार से मुलाकात

Leave a Comment

Name *

Email *

Website